NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

सफ़ेद मूसली की खेती

[1]गौरव कुमार [2]हृदेश शिवहरे एवं [3]अरविन्द कुमार

परिचय:

सफेद मूसली एक कंदीय फसल है जिसे कमजोरी दूर करने में उपयोग किया जाता है। झारखण्ड के जगलों में यह कहीं-कहीं पाया जाता है। इसका उपयोग वात एवं पित्त के शमन हेतु, चेहरे पर निखार लाने, खांसी, अस्थमा (दमा), बवासीर, चर्म रोगों, पीलिया, पेशाब संबधी रोगों , ल्यूकोरिया आदि के उपचार के लिए भी किया जाता है। मधुमेह, यौनशक्ति एवं बलवर्धन हेतु भी यह काफी प्रभावी सिद्ध हुआ है। दिल्ली के खारी-वावली के साथ-साथ इंदौर, अहमदाबाद, मुबई, हैदराबाद में सफेद मूसली के बड़े बिक्री केंद्र है। समाज के विशेष वर्गों में पौष्टिक आहार तथा मुड सप्लीमेंट के रूप में प्रयुक्त हो रहा है। देश के साथ विदेशों में भी इसकी मांग है।

किस्म

सफेद मूसली की कई किस्में देश में पाई जाती है। लेकिन क्लोरोफाइटम बोरीविलीएनम का उप्तादन अधिक होता है। इसका छिलका उतारना भी आसन है। इसमें पाए जाने वाले उपयोगी औषधीय तत्वों की मात्रा भी दूसरी किस्मों से अधिक होती है। इस किस्मं में ऊपर से नीचे तक जड़ों या ट्युवर्स की मोटाई प्रायः एक समान होती है यानी वेलनाकार। एक साथ कई ट्युवर्स (२-50) गुच्छे के रूप में पाई जाती है ऊपर से डिस्क या क्राउन से जुडी रहती है।

जलवायु

मूलतः गर्म तथा आर्द्र प्रदेशों का पौधा है। अतः झारखण्ड के सभी जिलों में इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है।

भूमि

कंदीय फसल होने के कारण सही विकास के लिए भूमि नर्म होना चाहिए परन्तु उत्पादन की दृष्टि से रेतीली दोमट मिट्टी, हल्की लाल मिट्टी इसके विकास के लिए उपयुक्त पाई जाई है। मिट्टी का पी.एच. 6.5-8.0 होना चाहिए। जल विकास की पूरी व्यवस्था होनी चाहिए तथा भूमि में जीवाश्म की पर्याप्त मात्रा रहनी चाहिए। उत्पादन एवं गुणवत्ता की दृष्टि से एम्.डी.एच वायो 13 किस्म अच्छी है।

गौरव कुमार हृदेश शिवहरे एवं अरविन्द कुमार

[1,3]शोध छात्र (प्रसार शिक्षा), आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, अयोध्या (उ०प्र०)

[2]शोध छात्र (उद्यानिकी), आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, अयोध्या (उ०प्र०)

खेत की तैयारी

सफेद मूसली 8-9 महीने की फसल है जिसे मॉनसून में लगाकर फरवरी-मार्च में खोद लिया जाता है। अच्छी खेती के लिए यह आवश्यक है कि खेतों की गर्मी में गहरी जुताई की जाए। अगर संभव हो तो हरी खाद के लिए ढैंचा, सनई, ग्वारफली बो दें। जब पौधा में फूल आने लगे तो काटकर खेत में डालकर मिला दें। गोबर की सड़ी खाद 250 किवंटल प्रति हेक्टेयर की दर से अंतिम जुताई में मिला दें। खेतों में बेड्स एक एक मीटर चौड़ा तथा एक फीट ऊँचा बनाकर 30 सेंटीमीटर की दूरी पर (कतार) 15 सें.मी. पर पौधे को लगाते हैं। बेड्स बनाने के पूर्व 300-350 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से नीम यह करंज की खल्ली मिला दें।

बीज, उसकी मात्रा

व्यवसायिक खेती के लिए ट्युवर्स की जरूरत होती है। डिस्क या क्राउन स एल्गी ट्युवर्स या फिंगर को डिस्क के कुछ भाग के साथ काट लिया जाता है। कई बार एक-एक ट्युवर्स अलग की जाती है, कभी २-3 फिंगर साथ रखते हैं। यही डिस्क सहित कटे ट्युवर्स ही बीज के रूप में व्यवहार किये जाते हैं। प्रायः एक ट्युवर का वजन 10-20 ग्राम होता है और एक हेक्टेयर के लिए 10 विक्वंटल बीजों की जरूरत पड़ती है। वर्तमान में इनकी दरें 300 रूपये प्रति किलो है।

बीज उपचार एवं लगाने के तरीके

जैविक विधि में गोमूत्र (1:10) में 1-२ घंटे तक डुबोकर रखा जाता है। रसायनिक विधि में वेभिस्तीन या स्ट्रोप्टोसाईकिलन का 0.1% के घोल में रखते हैं। बुआई के लिए गड्ढे बना लिए जाते हैं। गड्ढे की गहराई उतनी होनी चाहिए जितनी bi बीजों का रोपण इन गड्ढों में कर हल्की मिट्टी डालकर भर दें।

सिंचाई एवं निकाई-गुड़ाई

रोपाई के बाद ड्रिप सिंचाई द्वारा पटा दें। बुआई के 7-10 दिनों के अंदर यह उगना प्रारंभ हो जाता है। उगने के 75-80 दिन तक अच्छी प्रकार बढ़ने के बाद सिंतबर के अंत में पत्ते पीले होकर सूखने लगते हैं तथा 100 दिन के उपरान्त पत्ते गिर जाते है। इसी तरह से पौधों को छोड़ दिया जाता है फिर फरवरी-मार्च में जड़े उखाड़ी जाती है। फसल के उगने के बाद (20-25 दिन) बायोजाईम क्रॉप प्लस 1 मिली. 1 लिटर पानी पानी में या बायोजाईम ग्रैनुअल (20-30) किलो प्रति हेक्टेयर देने से अच्छे परिणाम मिलते हैं।

मूसली बरसात में लगाई जाती है। नियमित बारिस में सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती। अनियमित मॉनसून में 10-12 दिन में एक सिचाई दें। अक्तूबर के बाद 20-21 दिनों पर हल्की सिंचाई करते रहना चाहिए। नमी बनाए रखने के लिए मलचिंग भी किया जाता

है। जरूरत है जब तक मूसली उखाड़ न ली जाए तब तक नमी बनाए रखें।

हार्वेस्टिंग

जबतक मुसली का छिलका कठोर न हो जाए तथा इसका सफेत रंग बदलकर भूरा न हो तबतक जीमन स इन्हीं निकालने। मुसली को उखाड़ने का समय फरवरी के अंत से मार्च तक है।

- खोदने के उपरात इसे दो कार्यों हेतु प्रयुक्त किया जाता है:

1. बीज हेतु रखना या बेचना
2. इसे छीलकर सुखाकर बेचना

बीज के रूप में रखने के लिए खोदने के 1-२ दिन तक कंदों को छाया में रहने दें ताकि अतिरिक्त नमी कम हो जाए फिर कवकरोधी दवा से उपचारित कर रेट के गड्ढों, कोल्ड एयर, कुल्ड चैम्बर में रखें।

सुखाकर बेचने के लिए फिंगर्स को अलग-अलग कर धुप में 3-4 दिन रखा जाता है। अच्छी प्रकार सुख जाने पर बैग में पैक कर बाजार भेज देते हैं।

उपजसाधारणतः बीज की तुलना में गीली मुसली 6-7 गुणा प्राप्त होती है। अतः प्रति हेक्टेयर 10 किवंटल बीज से 60-70 किवंटल गीली मुसली प्राप्त होगी।

अच्छा यह होगा कि जो लम्बी और बड़ी ट्युबर्स हैं उन्हें छीलकर सुखा लिया जाए और पतली एवं छोटी ट्युवर्स को बीज के रूप में काम में लाया जाए। इस प्रकार एक हेक्येटर में 60 किवंटल गीली मुसली में 10 किवंटल बीज के लिए रखकर शेष 59 किवंटल सुखा दें ताकि 80% सुखकर 10 किक्वंल सुखी मूसली प्राप्त हो।

बिक्री: सुखु मुसली के प्रकार एवं बिक्री दर

'अ' श्रेणी- सही प्लाटिंग मैटिरियल से अच्छी तरह उगाई गई मुसली जो लंबी, मोटी, सफेद एंव कड़क हो उसके मूल्य 800 रूपये प्रति किलो मिलते हैं।

'ब' श्रेणी- इस श्रेणी का मुसली 'अ' श्रेणी की मुसली से कम या हल्की होती है जिसका मूल्य 600 रु. तक मिलता है।

'स' श्रेणी- इस श्रेणी की मुसली काफी छोटी, पतली तथा भूरे रंग की होती है जो जगलों से परिपक्व अवस्था में उखाड़ी जाती है। मूल्य 100-200 रु.किलो मिलता है।